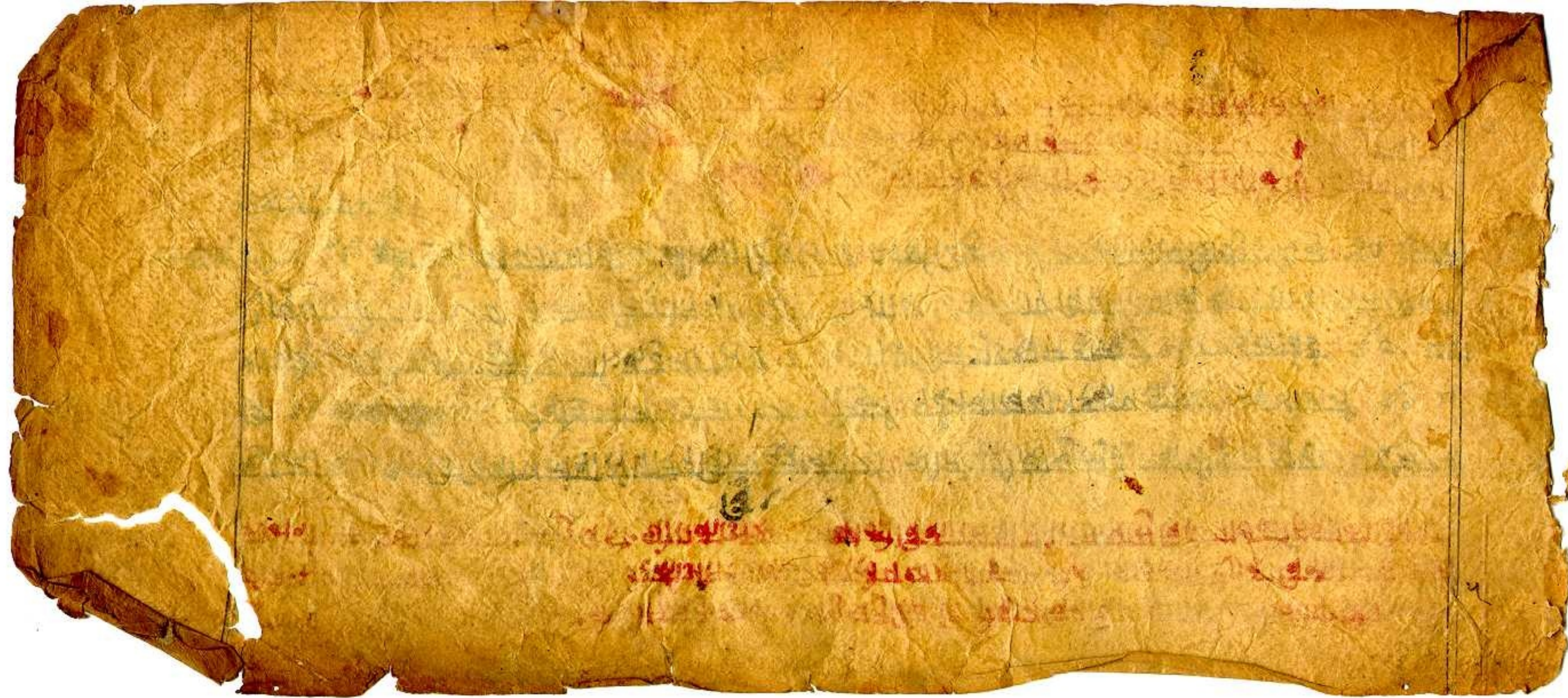




जावेति सुपारी को मदलाग्या आपन को वी कुंघनु वन को हुंगो सुंघनु किंवा सिंधो पानु चिनी पानु थोरा थोरा चीनी पानि वा मले
पीनु सुपारी लाग्या को नि को हो खवेति ॥ ७८ ॥ असा शरी का विकार ले म धा सुति हुनु नि को हो ॥ पाउले हिंड्या को विकार भया हाती
का भवारी को विकार मेथुन गन्या सुख हो घोरा का अश वा ॥ को विकार म पा म र्दन गन्या सुख हो पाउले हिंड्या को विकार

वि१

ध्यात्वाश्च कक्षां विप्रिनोपलंवा संप्राप्य किं न्य दुराकर्तं वा ॥ शीतां वृषी त्वाचुलु केन वा पी प्रस ह्य दूगी म द मुज ह
ति ॥ ३५ ॥ ~~स्वप्न मे वो द्यु यान स्य गज पान स्य मेथुनी~~ ॥ मर्दनं चास्व यान स्य प द्यां यान स्य भोजनी ॥ ३७ ॥ भं
गा म दे के न म दे क्र मे रा दुर्वा ह्व वर्गाः कटु ना गरं च ॥ गरेषु हे म प्र धितं गु डश्च म दा त्प ये क्षी र ग दे च खंडं ॥ ३८ ॥ पत्रा
शि पुष्पा शि फला नि या नि मूलानि पूर्वंतु म पो दितानि ॥ शा का नि सर्वा रा पु धि यां ति पा कं क्षा रे रा चा न्ये न तिलो
त्रयः ॥ ३९ ॥ ~~प्रकी पो पश मा वा यो र्ग्रीष्मा दिषु जिषु~~ ॥ वर्षा दिषु च पि त स्य क फ स्य शिशू रा दिषु ॥ ४० ॥ इत्य जी

रा सं ज रा स मा धं ॥ ॥ ॥ पाया

भया भोजन च त दु ध मां धा दि सुख हो भंगेति विजया काले मात्पा क न दुर्वा को र स कि वा अ मिलो ज्या के हि जे सो पिनु
अफी मला ग्या मरि चिक भुठो यानु ग स्या या मुन मा न्या को धानु अथवा धनु रो धानु म द ला ग्या गु ड धानु दु द का विकार वा उखा
नु सुख हो पत्रा तीति पत्र शा क फल शा क फल शा क मूल शा क या व त शा क त न को पा क व व धा र ले तिल का किं ग हा पो
ल्या का क्षा र ले सर्व शा क क न को पा का र्द्ध शुभ म सु ॥ ३९ ॥